अंक 31

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-8वां

भगवन बनने जन्मे हम

रचित कांति श्रीश्रीमाल भिलाई

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

सावधान
मोबाइल से हाथ फट सकता है

यह एक बालक के हाथ का फोटो है। आप जानते हैं इसके हाथ का यह हाल कैसे हुआ ? यह बालक मोबाइल पर बहुत गेम खेलता था। इसकी माँ ने इसे कई बार समझाया परन्तु यह नहीं माना। कई घंटे लगातार मोबाइल पर गेम खेलने से मोबाइल गरम हो गया और खेलते समय ही हाथ में फट गया और इसके हाथ की उंगलियाँ फट गईं।

इसलिये मोबाइल पर लगातार गेम खेलने वालो सावधान कहीं आपका हाल भी ऐसा न हो...।

ब्रेड में निकला चूजे का सिर

राजस्थान के शेखपुरा नाम के गाँव में रहने वाला विनोद शर्मा नाश्ता करते समय अचानक जोर से चिल्ला उठा। वह नाश्ते में ब्रेड खा रहा था और जब उसने ब्रेड के पैकेट से खाने के लिये एक और ब्रेड निकाली तो उसे एक चूजे का (मुर्गी का बच्चा) सिर दिखाई दिया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि वह शाकाहारी था और वह ब्रेड को शाकाहारी मानता था परन्तु यह देखकर उसे बहुत ग्लानि हुई। बाद में गांव के सारे लोगों ने एकत्रित होकर ब्रेड कम्पनी के सामने प्रदर्शन किया। यह देखकर ब्रेड कंपनी के मैनेजर ने माना कि वे ब्रेड में अंडे को मिलाते हैं। हो सकता है कि किसी अंडे में चूजा बन गया हो इसलिये उस ब्रेड में चूजे का सिर आ गया।

सावधान! कहीं आप तो ब्रेड नहीं खा रहे हैं।

संपादकीय

प्यारे बच्चो! जय जिनेन्द्र और शुभाशीष। आपके स्कूल खुल गये होंगे और आप अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गये होगे। लौकिक मार्ग में तो आपकी स्कूल की पढ़ाई तो काम की है और यह पढ़ाई तो इस जन्म में काम आयेगी और शायद न भी आये परन्तु जिनधर्म के संस्कार तो इस भव में भी शांति देगें और आगामी अनंत काल में भी शांति का कारण होंगे और हो सकता है भविष्य में इन जिनधर्म के संस्कारों के प्रभाव से हम भगवान बन जायें। आचार्य कुन्दकुन्द ने ग्वाला की पर्याय में एक शास्त्र मुनिराज को दिया और इसके फल में यह कौण्डेश नामक का ग्वाला अगली पर्याय में आचार्य कुन्दकुन्द जैसा महान जीव बन गया। पानीपत में एक गाय थी। वह किसी पाप के उदय से तिर्यन्च पर्याय में गाय बन गई। शायद उसे अपने पूर्व जन्म के संस्कार थे इसलिये वह रात्रि में कुछ नहीं खाती थी और पानी भी नहीं पीती थी। एक दिन बरसात के मौसम में दिन में ही अंधेरा हो गया और उसे बहुत तेज प्यास लगी, परन्तु उसने रात्रि समझकर पानी नहीं पिया और कुछ देर बाद सचमुच में ही रात्रि हो गई और प्यास से वह गाय मर गई। उस गाय ने देवगति प्राप्त की। यह सारी बातें उसके मालिक ने बताईं कि वह गाय मरने के बाद उसके सपने में आई और उसने सारी बात बताई। उस गाय का पूर्व संस्कारों के बल पर एक नियम दृढ़ता से पाला गया उसके फल में उसे देवगति मिली। ऐसी अनेक घटनायें ये सिद्ध करती हैं कि संस्कार ही हमारी रक्षा करते हैं। आज देश, समाज का वातावरण बहुत दूषित होता जा रहा है। जैसे मेले में ज्यों भीड़ बढ़ती है त्यों त्यों बेटा अपनी माँ की उंगली जोर से पकड़ता है उसे डर है कि माँ कहीं छूट न जाये ऐसे ही आज के गंदे वातावरण में हमें जिनधर्म को दृढ़ता से पकड़ना चाहिये जिससे हमारा जीवन सुन्दर बने। आशा है कि आप मेरी बात समझ गये होंगे। आपका जीवन मंगलमय हो ऐसी भावना

आपका विराग

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2014

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, विले पार्ले, मुम्बई

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	1
2.	सूची	2
3.	हमारे तीर्थक्षेत्र	3
4.	हिमाचल में जैन धर्म	4
5.	जिन दर्शन क्यों	5
6.	जैन धर्म का प्रभाव	6
7.	इसे भी जानिये	7
8.	सावधान ! ग्लिसरीन में मांस	8-9
9.	क्षणभंगुर सौंदर्य	10-11
10.	क्या आप जानते हैं	12
11.	प्रेरक प्रसंग	13
12.	ब्राह्मी लिपी	14
13.	जैन धर्म और भारत के सम्राट	15-16
14.	अब नहीं पहनूंगा	17-18
15.	आपके प्रश्न	19
16.	संस्कार /सफलता के भेद	20
17.	अद्भुत बालक	21-22
18.	परमेष्ठी प्रश्नमाला	23
19.	कहानी - वेश का महत्व	24
20.	प्रेरक प्रसंग	25
21.	एक ऐसा मुस्लिम	26
22.	जैन क्विज	27
23.	समाचार	28
24.	ऐतिहासिक जैन शिल्पी	29
25.	वीर बनना है	30
26.	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

हमारे तीर्थ क्षेत्र
निर्वाण क्षेत्र

फलहोड़ीबड़ागाँव

मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले में स्थित एक निर्वाण क्षेत्र है - फलहोड़ी बड़ा गाँव।यह क्षेत्र पपौराजी अतिशय क्षेत्र से 25 किमी की दूरी पर स्थित है। धसान नदी के तट पर स्थित इस क्षेत्र से साढ़े तीन करोड़ मुनिराजों ने निर्वाण पद प्राप्त किया। निर्वाण काण्ड में उल्लेख है कि - फलहोड़ी बडग्राम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप । प्राकृत निर्वाण काण्ड में - फलहोड़ी बड़ाग्रामे पश्चिम भायाम्भि द्रोणगिरि सिहारे (गाथा 14) के रूप में इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है।

आचार्य पद्मनन्दि के समय यह चन्देल राजा शासन करते थे। आचार्य पद्मनन्दि ने इसे वारानगर, आचार्य कुन्दकुन्द ने बड़ागाँव, जिनसेन आचार्य ने कूटादि, जिनप्रभसूर ने इसे कोटि शिला कहा है। आदिपुराण में भरतचक्रवर्ती द्वारा कूट पर्वत का उल्लंघन करके परियात्र देश को प्राप्त करने का उल्लेख है। वह कूट पर्वत यहीं बड़ा गाँव में ही है।

यहाँ कोटि पहाड़ पर सिद्ध गुफा में मुनिराजों के चरण चिन्ह विराजमान हैं। साथ ही पर्वत पर विशाल जिनमन्दिर एवं मानस्तंभ भी है।

इस क्षेत्र पर पहुँचने के लिये दिल्ली-मुम्बई रेल्वे लाइन पर ललितपुर या झांसी उतरें और बस मार्ग से टीकमगढ़ होते हुये यहाँ पधारें। इस क्षेत्र के आसपास आपको आहारजी, पपौराजी, सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, नवागढ़, कारीटोरन, बानपुर आदि क्षेत्रों के दर्शन का लाभ ले सकते हैं। सम्पर्क - 09977023415, 9977016880, 8959165816

हिमाचल प्रदेश में जैन धर्म

हिमाचल प्रदेश के प्राचीन नगर कांगड़ा अपने सांस्कृतिक और कलात्मक वैभव के लिये प्रसिद्ध है । कांगड़ा में जैन संस्कृति का इतिहास बहुत पुराना है । कांगड़ा में ब्राह्मण परिवारों के बालक जब प्रथम बार शिक्षक के पास पढ़ने जाते थे तो गुरु उनके कान में मन्त्र सुनाते थे, वह मन्त्र था - ॐ नमो सिद्धम् । यह सर्वसिद्धि का सूचक था। यह णमोकार मन्त्र का ही अंश है । प्राप्त इतिहास के अनुसार आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व हिमाचल में जैन धर्म का बहुत प्रचार था। मुनिराजों का आगमन न होने से और समय के प्रभाव से जैनियों की संख्या कम होती गई। यहाँ नगरकोट के राजा जैन थे और किले के चार मंदिरों में एक दिगम्बर जिनमंदिर था। संवत् 1306 में श्री शांतिनाथ, श्री अजितनाथ, श्री धर्मनाथ, श्री वासुपूज्य, श्री मुनिसुव्रत, श्री सीमंधर स्वामी आदि की प्रतिमाओं की स्थापना की गई । इसका विशेष उल्लेख करते हुये गुर्वावली में लिखा है कि सेठ विमलचन्दजी ने बहुत धन व्यय करते प्रभु शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई। सीमंधर भगवान की प्रतिमा गोष्टिक हीरा ने, पद्मनाथ भगवान की प्रतिमा महाभाव सागर हाला ने प्रतिष्ठित कराई ।सन् 1484 में उपाध्याय जय सागरजी ने कांगड़ा की यात्रा की। उस समय राजा रूपचन्द का स्वर्णमय प्रतिमा वाला प्राचीन जिनालय था। कहा जाता है इस जिनालय का निर्माण तीर्थंकर नेमिनाथ के समय राजा सूसम ने कराया था।

"कांगड़ा का जैन इतिहास" नामक पुस्तक के अनुसार कांगड़ा के अम्बिका देवी मन्दिर के पश्चिम में कई छोटे-छोटे जैन मंदिर हैं। वर्तमान में इसी मंदिर में एक कोने में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है तथा यहाँ काली माता के मंदिर में एक पत्थर पर ओम् स्वस्ति श्री जिनाय नमः लिखा हुआ है। कांगड़ा के इन्द्र देव मंदिर में दो प्राचीन जैन प्रतिमायें मुख्य द्वार पर लगी हुईं हैं। यहाँ से 23 मील दूर बैजनाथ मन्दिर में सूर्य देव का पाद पीठ है परन्तु इसके साथ लगे शिलालेख स्पष्ट होता है कि यह भगवान महावीर की प्रतिमा है।

इस तरह अनेक साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन समय में कांगड़ा ही नहीं ,हिमाचल प्रदेश में जैन धर्म का बहुत प्रचार-प्रसार था। यही हमारे महान जैन धर्म का गौरव है।

निन्दा उनकी होती है जो दूसरों की प्रशंसा नहीं करते ।

जिनदर्शन क्यों?

प्रत्येक श्रावक प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करता है और जिनेन्द्र दर्शन प्रतिदिन करना भी चाहिये, परन्तु जिनदर्शन क्यों करना चाहिये - इसका भी हमें ज्ञान होना आवश्यक है। बिना उद्देश्य के जिनेन्द्र भगवान का दर्शन तो मात्र औपचारिकता है या परम्परा का निर्वाह करना है इसका कुछ विशेष फल नहीं है।

जिनशास्त्रों के अनुसार जिनेन्द्र भगवान का दर्शन एक मात्र अपने स्वरूप को जानने के लिये होना चाहिये। जिनेन्द्र भगवान की मुद्रा हमें भी भगवान बनने की प्रेरणा देती है कि हम भी भगवान जैसे ही गुणों के धारी हैं बस आवश्यकता उन गुणों को पहचानने की है तो हम भी स्वयं भी भगवान बन सकते हैं।

जैसे बरसात के समय में हम घर से छाता लेकर निकले और किसी मित्र से मिलने के लिये गये। हमें प्रतिदिन तो छाता लेकर चलने की आदत नहीं है इसलिये हम वह छाता मित्र के यहाँ ही भूल गये। थोड़ी दूर चलने पर जब हमने किसी दूसरे व्यक्ति को छाता ले जाते देखा तो हमें याद आया कि अरे ! हम भी छाता लेकर आये थे और हम वापस अपने मित्र के घर छाता लेने जाते हैं। ऐसे ही हम अपने आत्म स्वरूप को भूलकर संसार में भ्रमण करके बहुत दुःख भोग रहे हैं।

जिनेन्द्र भगवान की मुद्रा को दर्पण की उपमा भी दी जाती है। जैसे हम दर्पण को अपना चेहरा देखने के लिये देखते हैं और यदि चेहरे पर कोई कालिमा आदि हो तो उसे साफ करते हैं। ऐसे ही हम जब जिनेन्द्र भगवान का दर्शन करते हैं तो हमें ये स्मरण होना चाहिये कि हमारा स्वरूप तो निर्दोष है और हमें राग-द्वेष की कालिमा मिटाकर अपने शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति करना है और इसका एकमात्र उपाय सम्यग्दर्शन है।

ऐसे परिणामों से किया गया जिनेन्द्र दर्शन कार्यकारी है। कहा भी है -

नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन मैंने पाया।
तुम जैसी प्रभुता पाने को, मन मेरा ललचाया ।

- पण्डित राजेन्द्र कुमार जी के प्रवचन से साभार

ऐतिहासिक तथ्य

जैन धर्म का प्रभाव

Roman Rollard के अनुसार महात्मा गांधी के माता-पिता को जैन धर्म पर बहुत श्रद्धान था। विदेश जाने के पहले महात्मा गांधी को उनकी माँ ने तीन प्रतिज्ञायें दिलवाईं था- मांस भक्षण नहीं करना, शराब का सेवन नहीं करना, पर स्त्री सेवन नहीं करना। Alfred Master ने लिखा है कि "ये प्रतिज्ञायें किसी ब्राह्मण साधु ने नहीं बल्कि किसी राजचन्दजी नाम के जैन साधु से दिलवाईं थीं।" महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में स्वयं स्वीकार किया है कि "विलायत में मुझे कई बार मांस भक्षण और शराब पीने के लिये के लिये मजबूर किया गया परन्तु ऐसे अवसरों पर जैन गुरु से ली हुईं प्रतिज्ञा मेरे सम्मुख आ खड़ी होतीं थीं, जिसके कारण मैं पापों से बचा रहा।"

विश्व के अनेक विचारक इस बात की खोज करते रहे हैं कि महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धान्त को कहाँ से प्राप्त किया ? इटली के विचारक Luciano Margrini के शब्दों में महात्माजी ने अहिंसा सिद्धान्त को जैन धर्म से सीखकर इतनी महान पदवी प्राप्त की। Dr. Felix Valvi के अनुसार जैन गुरु के प्रभाव से गांधीजी अहिंसा सिद्धान्त के दृढ़ विश्वासी हुये हैं।

गणतन्त्र राज्य - आदि पुरुष श्री ऋषभदेवजी के पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत के नाम पर भारतवर्ष कहलाने वाला हमारा पवित्र देश **15** अगस्त **1950** को Sovereign democratic Republic हुआ। इस राज्य की नियुक्ति अहिंसा सिद्धान्त पर स्थिर है।

भगवान महावीर ने कहा कि सभी आत्मायें बराबर हैं कोई छोटा-बड़ा नहीं है। इस पावन सिद्धान्त के आधार पर पक्षपात मिटाने के लिये भारत सरकार ने राय बहादुर, खान बहादुर आदि पदवियों को समाप्त कर दिया। सरकार ने घोषित किया कि सरकार के सभी कर्मचारी जनता के सेवक हैं, इसलिये किसी के साथ ऊँचा-नीचा व्यवहार मत करो, सभी के साथ प्रेम का व्यवहार करो।

देश की उन्नति एवं विकास के लिये पंचवर्षीय योजनायें बनाईं गईं और जनता को उसमें सहयोग देने के लिये कहा गया तो अनेक जैनियों ने करोड़ों रुपये सरकार को दिये।

उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पंत ने कहा था - जैनियों ने लोक सेवा की भावना से भारत में अपना अच्छा स्थान बनाया है।

प्रशंसा चाहना पाप भाव है और पाप से प्रशंसा नहीं निन्दा मिलती है ।

इसे भी जानिये

रसोईघर का अर्थ - रसोई को रसोड़ा, रसोईघर भी कहते हैं। परन्तु आजकल किचन अधिक लोकप्रिय और प्रचलित हो गया है। रसोई शब्द 'रस' शब्द में 'ओई' प्रत्यय से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है पका हुआ भोजन।

चौका- बुन्देलखण्ड में रसोईघर को 'चौका' भी कहा जाता है। किसी मुनि संघ के आहार के लिये चौका शब्द का प्रयोग ही प्रचलित है। चौका शब्द हमारी संस्कृति को ही व्यक्त करता है। चौका शब्द संस्कृत के 'चतुष्क' शब्द और प्राकृत भाषा के 'चऊक्क' और हिन्दी के चौके का विकसित रूप है। जिसका अर्थ है वह स्थान जहाँ रसोई तैयार की जाती है और परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। चौका का सीधा सम्बन्ध सूर्य से है।सूर्य उदय होने के बाद रसोई घर में प्रवेश करना और सूर्य अस्त होने के पूर्व भोजन सम्बन्धी सारे कार्य समाप्त करना। परन्तु आज अनेक दोष हमारे परिवारों में आ गये हैं।

सोला - शुद्ध तरीके से बनाये हुये एवं मर्यादित भोजन को सोले का भोजन कहा जाता है। इसके दो शब्द मिलते हैं 'सोला' एवं 'शोला'। सोला शब्द का अर्थ है पवित्रता, मांगलिकता और उज्जवलता। यह संस्कृत से व्युत्पन्न 'सोला अरबी' का शब्द है। जिसका अर्थ है आग की लपट। आग का स्वभाव है दोष को निकालना। सोला शब्द का अर्थ सोलह भी है। सोलह संख्या का बहुत महत्व है। सोलह कारण भावना, सोलह स्वर्ग, चन्द्रमा की सोलह कलायें हैं, सोलह वर्ष में बच्चों का परिपक्व होना। मराठी में सोंवला, सोवला शब्द आये हैं जिसका अर्थ स्वाभाविक, निर्मल, अविकृत, स्वच्छ, पवित्र।सोंवले का अर्थ - धोया-सुखाया वस्त्र भी है। गुजराती में सोल का अर्थ सोलह और सोलु का अर्थ तेजोमय, स्वच्छ साफ सुथरा होता है।

कुल परम्परा

गुजरात के प्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित श्री बाबूभाई मेहता विवाह के कुछ वर्ष बाद से ही ब्रह्मचर्य का अभ्यास कर रहे थे। इस ब्रह्मचर्य की साधना के समय में ही उनके एक मात्र पुत्र का स्वर्गवास हो गया। यह देखकर बाबूभाई के पिता रो पड़े और बाबूभाई से कहने लगे - बेटा ! तुम ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने लगे हो और इस एक पुत्र का स्वर्गवास हो गया, तुम्हारा वंश कैसे चलेगा ? बाबूभाई बोले - पिताजी ! अब संसार की कुल परम्परा को नहीं चलाना। हम तो सिद्धों के कुल के हैं। अब तो हमें सिद्धों की परम्परा को आगे बढ़ाना है ।

सावधान!

ग्लिसरीन में मांस है.....!

ग्लिसरीन एक ऐसा तरल पदार्थ है जो रूखी-सूखी त्वचा को नमी प्रदान करने के अनेक पदार्थों में बहुत प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा भी ग्लिसरीन के अनेक उपयोग हैं। लेकिन क्या आपको मालूम है कि ग्लिसरीन कैसे बनाया जाता है? ग्लिसरीन दो प्रकार से बनाया जाता है पहला वनस्पतियों से और दूसरा पशुओं की चर्बी से। वनस्पतियों से ग्लिसरीन बनाना बहुत मंहगा होने से इस विधि से बहुत कम बनाया जाता है। दूसरा पशुओं की चर्बी आसानी से उपलब्ध होने और सस्ती होने से इससे ग्लिसरीन बनाना बहुत आसान है। मुख्य रूप से गाय और सुअर की चर्बी से सर्वाधिक ग्लिसरीन बनाया जाता है। ये चर्बी क्या है ? जब किसी भी गाय, सुअर, बकरी आदि जानवर को काटा जाता है तो उसमें मांस, हड्डियों और कोशिकाओं के अलावा सफेद रंग का चिपचिपी मोटी परत प्राप्त होती है इसे ही चरबी कहा जाता है। इसे खींचकर अलग किया जा सकता है।

जैसे हमारे घरों में दूध से मलाई की परत को अलग किया जाता है वैसे ही इस चर्बी को एक बड़े बरतन में निश्चित तापमान पर गर्म करते हैं और इससे प्राप्त तेल में सोडियम/पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड मिलाया जाता है। ऐसा करने पर करने से यह चर्बी पिघलने लगती है जैसे मलाई पिघलकर घी बनने लगती है। आप कहेंगे कि भारत में बनने वाली ग्लिसरीन शाकाहारी होती है परन्तु आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया में भारत में ही सबसे अधिक ग्लिसरीन का आयात किया जाता है। भारत में औसतन ३५०० टन मासिक ग्लिसरीन आयात किया जाता है। मलेशिया, इंडोनशिया, थाइलेंड जैसे मांसाहारी देश सबसे ज्यादा ग्लिसरीन भारत में निर्यात करते हैं। क्या ये देश शाकाहारी ग्लिसरीन बनाकर भेजते होंगे....?

एक पशु में सामान्य रूप से ५-६ किलो चर्बी पाई जाती है इसलिये पशुओं को निर्दयता से मारा जा रहा है। शाकाहारी ग्लिसरीन होठों पर लगाने के बाद काफी समय तक नमी बनाये रखती है परन्तु मांसाहारी ग्लिसरीन लगाने पर जल्दी होंठ सूख जाते हैं। दूसरी ओर वनस्पति से बनी हुई ग्लिसरीन स्वाद में मीठी होती है और चर्बी से बनी ग्लिसरीन के स्वाद में खट्टापन होता है। इस चर्बी का प्रयोग लिपिस्टिक, नहाने का साबुन, वनस्पति घी में भी किया जाता है। साबुन के घटक तत्त्वों में यदि टेलो लिखा है तो समझना कि उसमें चर्बी का प्रयोग किया गया है। किसी भी वस्तु का प्रयोग करने के पूर्व आप उसके अर्न्तघटक तत्व पढ़ लें यदि उसमें वेजीटेरियन ग्लिसरीन लिखा है तो वह शुद्ध समझना अन्यथा वह मांसाहारी है। आश्चर्य है अपने आपको शाकाहारी कहने वाली हिन्दु समाज और गाय को माता मानने वाले भी इन महाअशुद्ध मांसाहारी पदार्थों का प्रयोग कर रहे हैं। अतः सावधान ! कहीं आप मांस का सेवन तो नहीं कर रहे .....

- सतीश मरके **09881015782**

(विदर्भ जैन न्यूज से साभार)

मौन रहने के गुण

- अनावश्यक बोलने से अच्छा मौन रहना अच्छा है।
- असत्य बोलने से बचोगे।
- किसी से बैर नहीं होगा।
- किसी की निन्दा नहीं होगी।
- समय का दुरुपयोग नहीं होगा।
- व्यर्थ कार्यों का बोझा नहीं पड़ेगा
- किसी से क्षमा नहीं मांगना पड़ेगी।
- बाद में पछताना नहीं पड़ेगा।
- शांति भंग नहीं होगी।
- आपके ज्ञान की रक्षा होगी।

ज्ञान जब बोझ बन जाता है जब वह अहंकार के साथ हो जाता है ।

क्षणभंगुर सौन्दर्य

षट्खण्ड के अधिपति सनतकुमार चक्रवर्ती की काया स्वर्ण के समान सुन्दर थी। उनके रूप की चर्चा स्वर्ग के देवों में भी हुआ करती थी। एक बार सौधर्म स्वर्ग में उनके अनुपम सौन्दर्य की चर्चा चल रही थी, तभी दो देव ब्राह्मण का रूप बनाकर सनतकुमार का सुन्दर रूप देखने के लिये उनके नगर पहुँच गये।

देव जिस समय चक्रवर्ती को देखने के लिये पहुँचे उस समय चक्रवर्ती केवल लंगोट पहने हुये थे और शरीर पर उबटन लगवा रहे थे। देवगण उनके अद्भुत सौन्दर्य को देखकर चकित रह गये। चक्रवर्ती ने पूछा - हे महोदय! आप लोग कौन हैं और आश्चर्य से क्या देख रहे हैं ?

महाराज! हमने आपके सौन्दर्य की चर्चा तो बहुत सुनी थी परन्तु विश्वास नहीं होता था, आज आपको प्रत्यक्ष देखकर हम अत्यंत प्रभावित हुये हैं।

अपनी काया की प्रशंसा सुनकर चक्रवर्ती गौरव का अनुभव करने लगे और बड़े गर्व से बोले - आप लोगों ने मेरा रूप देखा ही कहाँ है? यह तो कुछ भी नहीं। जब मैं सुन्दर आभूषण पहनकर और राजसी वेशभूषा में राजदरबार में आऊँगा, तब देखना कैसा सुन्दर लगता हूँ ?

तो हम आपको राजसभा में ही देखने आयेंगे। यह कहकर वे देव चले गये।

कुछ समय बाद चक्रवर्ती अत्यंत सुन्दर राजसी वेशभूषा एवं बहुमूल्य आभूषण पहनकर राजसभा के सिंहासन पर विराजमान हुये। कुछ समय बाद स्वर्ग के वे देव उनके सुन्दर रूप को देखने के लिये राजसभा में उपस्थित हुये और बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से चक्रवर्ती के रूप को देखा और दुखमय मुद्रा बनाकर नकारात्मक सिर हिलाया। यह देखकर चक्रवर्ती ने पूछा - हे महोदय! आप मेरा रूप देखकर उदास क्यों हो गये ?

मन को पवित्र विचारपूर्ण रखो, तो तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता।

हे महाराज! सच कहें तो आपके पहले के और अभी के रूप में जमीन - आसमान का अन्तर है। पहले आपकी काया अमृत के समान थी और अब आपके शरीर में विष प्रवेश हो गया है। इसलिये हम उदास हैं। आप चाहें तो इसकी परीक्षा कर सकते हैं। आप थूकें और आपके थूक पर एक मक्खी आकर बैठेगी और वह मर जायेगी। चक्रवर्ती ने ऐसा ही किया और जब उन्होंने देखा कि उनके थूक पर बैठने से मक्खी मर गई तो वे शरीर के स्वतन्त्र परिणमन का विचार करने लगे। मैं व्यर्थ ही इस शरीर के रूप पर घमंड कर रहा हूँ। अरे! मैं तो देह से रहित अशरीरी चैतन्य आत्मा हूँ। यह शरीर तो नष्ट होने वाला है। मैं तो सदा एक रूप रहता हूँ। ऐसा विचार करते हुये उन्होंने दिगम्बर मुनि दीक्षा लेने का निर्णय कर लिया।

दुःखी रहने के 10 कारण

1. देरी से सोना और देरी से उङ्गना
2. लेन-देन हिसाब न रखना ।
3. स्वार्थमय जीवन जीना ।
4. अपनी बात की सत्य कहना ।
5. किसी का विश्वास न करना ।
6. बिना कारण झूठ बोलना ।
7. काम समय पर न करना ।
8. बिना मांगे सलाह देना ।
9. बीते हुये सुख को बार-बार याद करना ।
10. हमेशा मात्र अपने लिये ही सोचना ।

जो दूसरों पर निर्भर रहता है, वह सबसे कायर और भिखारी है ।

क्या आप जानते हैं

- 2200 वर्ष पहले पूरे विश्व में जैनों की संख्या 40 करोड़ थी आज मात्र 70 लाख है।
- दिल्ली की कुतुबमीनार 27 जैन मंदिरों को तोड़कर बनाई गई।
- सेंट जेवियर ने आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व 20000 जैनों को तोप से मार डाला क्योंकि उन्होंने से क्रिश्चियन बनने से मना कर दिया था।
- चीन में लगभग 1300 वर्ष पूर्व 28000 जैन मंदिर थे।
- इजराइल देश में मात्र 2 भगवानों की पूजा होती है, पहले आदिनाथ के पिता नाभिराय की एवं दूसरे उनकी माता मरुदेवी की। आज भी क्षमावाणी के दिन जैविश लोग सफेद कपड़े पहते हैं, लिफ्ट का प्रयोग नहीं करते और परस्पर में सॉरी बोलते हैं।
- तिरुपती बालाजी का प्रसिद्ध जैन मंदिर है। इसमें 21वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ की काले पाषाण की प्रतिमा है।
- नेपाल के सारे मंदिरों में पशुओं की बलि दी जाती है। परन्तु पशुपतिनाथ के मंदिर में बलि नहीं दी जाती, पहले वह एक जैन मंदिर था।
- उड़ीसा के जगन्नाथपुरी का प्रसिद्ध मंदिर जैन मन्दिर है।
- उत्तराखंड का बद्रीनाथ का मंदिर जैन मंदिर है, यहाँ जैन विधि से प्रक्षाल होता है।
- सोलहवीं सदी में गोवा राज्य पूरा जैन राज्य था।

विज्ञान वाटिका पुस्तक उपलब्ध

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, उस्मानपुरा, दिल्ली द्वारा प्रकाशित विज्ञान वाटिका पुस्तक हमारे पास उपलब्ध है। इस पुस्तक में जिनागम क आधार अनेक प्रश्नों का संकलन है। इन प्रश्नों के उत्तर लिखकर जमा करें और सही उत्तर भरने वाले साधर्मी को दिल्ली में विशाल समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा। उत्तर भरकर अगस्त 2015 तक जमा कर सकते हैं। इसका मूल्य मात्र 50/- रुपये है। इसे प्राप्त करने के लिये आप हमसे सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क - 9300642434

वर्तमान में बालक बनें, सत्य में युवक बनें और ज्ञान में वृद्ध बनें।

गुणों का मूल्य

सम्राट चन्द्रगुप्त ने एक दिन अपने प्रतिभाशाली मंत्री चाणक्य से सहज में कहा कि कितना अच्छा होता यदि तुम रूपवान होते ! तो चाणक्य ने उत्तर दिया - महाराज ! रूप तो बाहर का लक्षण है, व्यक्ति की पहचान तो गुण और बुद्धि से होती है, रूप से नहीं।

क्या कोई ऐसा उदाहरण है जहाँ गुण के सामने रूप फीका लगता हो ।- चन्द्रगुप्त ने पूछा।

ऐसे तो कई उदाहरण हैं महाराज! आप पहले पानी पीकर मन को हल्का करें, फिर हम बात करते हैं। ऐसा कहते हुये चाणक्य ने पानी के दो गिलास राजा की ओर बढ़ा दिये। चन्द्रगुप्त ने पानी पिया। फिर चाणक्य ने पूछा - आपको कौन से गिलास का पानी मीठा और स्वादिष्ट लगा?

महाराज ने कहा - दूसरे गिलास का। परन्तु यह अन्तर कैसे आया?

चाणक्य ने बताया - पहले गिलास का पानी सोने का घड़े का था और दूसरे घड़े का पानी काली मिट्टी के घड़े का। वहाँ उपस्थित महारानी ने मुस्कराकर कहा - महाराज ! हमारे मंत्री ने अपनी बुद्धिमत्ता से प्रश्न का उत्तर दे दिया है। यह सोने का सुन्दर घड़ा किस काम का, जिसका पानी बिना स्वाद का और सामान्य है। दूसरी ओर ये मिट्टी का घड़ा जो दिखने में बदसूरत होने पर भी इसका पानी स्वादिष्ट और मीठा है। अब आप बतलायें रूप बड़ा है या बुद्धि .....?

माता

जैन कवि पण्डित भागचन्दजी जिनशासन के परम भक्त थे। एक बार उनके पुत्र को चेचक निकल रही थी। पत्नी ने कहा - इनकी शांति के लिये कुल देवी की पूजा करना जरूरी है। पण्डितजी ने समझाया - बेटे को यह बीमारी पाप के उदय से हुई है और इसका इलाज वैद्य कर सकते हैं इसमें कुल देवी की पूजा की क्या आवश्यकता है ? पत्नी ने कहा - हर जगह तुम्हारी पंडिताई नहीं चलेगी। तुम्हें मेरे साथ चलकर कुलदेवी की पूजा करनी ही होगी, नहीं तो मैं भोजन का त्याग कर दूंगी।

पण्डितजी ने कहा - यदि वह तुम्हारी माताजी हैं तो मेरी सास हुईं तो मैं उनको नमस्कार कैसे कर सकता हूँ ?

(पण्डितजी के परिवार में सास के चरण स्पर्श नहीं किये जाते थे।)

विश्व की प्राचीनतम लिपि –

ब्राह्मी लिपि

ब्राह्मी लिपि वर्णमाला

ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की प्राचीनतम लिपि है।

तीर्थंकर ऋषभदेव की ब्राह्मी और सुन्दरी नाम की दो पुत्रियाँ थीं। बाल्यावस्था में वे ऋषभदेव की गोद में जाकर बैठ गईं। ऋषभदेव ने उनके विद्याग्रहण का काल जानकर लिपि और अंकों का ज्ञान कराया।

ब्राह्मी दायीं ओर और सुन्दरी बायीं ओर बैठी थी, ब्राह्मी को वर्णमाला का बोध कराने के कारण लिपि बायीं ओर से लिखी जाती है। सुन्दरी को अंक का बोध कराने के कारण अंक दायीं ओर से इकाई, दहाई .... के रूप में लिखे जाते हैं।

इस लिपि का अभ्यास करने से भारत की अधिकांश लिपियों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ब्राह्मी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। इसके लिखने और पढ़ने में एक रूपता है।

वर्तमान में भारतवर्ष में अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं की लिपियों को छोड़कर समस्त लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं।

प्रशंसा चाहना पाप भाव है और पाप से प्रशंसा नहीं निन्दा मिलती है ।

की थीं। जैन कवि रत्नशेखर का भी फिरोजशाह ने बहुत सन्मान किया था।

सैयदवंश (१४१३- १४५१ ई.) - इस समय में दिगम्बर जैन साधुओं को बहुत सन्मान की दृष्टि देखा जाता था। राज्य के अनेक धनवान श्रेष्ठी और महिलायें बिना किसी रुकावट के मुनिराजों के दर्शन करने आतीं थीं।

लोदी वंश (१४५१-१५२६ ई.) - इस समय में कुमार सेन, प्रताप सेन आदि अनेक दिगम्बर मुनि भारतवर्ष में विहार कर रहे थे। सिकन्दर निजाम लोदी ने दिगम्बर मुनियों का आदर किया था। दिगम्बर आचार्य विशालकीर्ति ने सिकन्दर के समक्ष वाद किया था।

मुगल वंश (१५२६-१५४० ई.) - बाबर बादशाह अहिंसा प्रेमी थे। उन्होंने अपने पुत्र हुमायूँ को वसीयत में लिखा था कि अपने हृदय को धार्मिक पक्षपात से शुद्ध रखना और गौ हत्या से दूर रहना। हुमायूँ के राज्य में जैन समाज के लोगों को किसी प्रकार की बाधा नहीं हुई। वह राज्य में जीव हिंसा और पशु बलि को पसन्द नहीं करता था।

सूरि वंश (१५४०-१५५५ ई.) - इस समय में जैन धर्म बहुत अच्छी स्थिति में था। इस समय मुनि श्रीचन्द, माणिक्यचन्द्र, आचार्य देव, क्षेमकीर्ति, आदि अनेक प्रसिद्ध जैन मुनि हुये। उस समय भारत की यात्रा पर आये फ्रेंच यात्री Bernier एवं Tavernier ने लिखा कि "नग्न जैन साधुओं का यहाँ बहुत आदर है। नग्न जैन साधुओं ने अपने तप से अपनी इन्द्रियों पर विजय कर ली थी जिससे न उन्हें कोई विकार होता था और उन्हें देखकर अन्य लोगों को।"

प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने भी अपनी कविताओं जैन मुनियों का उल्लेख किया है।

इस तरह स्पष्ट होता है कुछ मुगल शासकों के शासन काल को छोड़कर

जैन क्विज के उत्तर - १.संभवनाथ २. अभिनंदननाथ ३. शांतिनाथ ४. अजितनाथ ५. शीतलनाथ ६. अरहनाथ ७. आदिनाथ ८. धर्मनाथ ९. पद्मप्रभ १० विमलनाथ ११. चंद्रप्रभ १२. पुष्पदंत १३ अनंतनाथ १४ मुनिसुव्रतनाथ १५ मल्लिनाथ

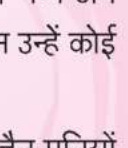

जैन धर्म और भारत के सम्राट

भारत में अंग्रेजों के पूर्व लम्बे समय तक मुगल शासकों ने शासन किया है। हम कुछ मुगल सम्राटों के समय जैन धर्म की स्थिति के बारे में मुगल सम्राटों के व्यवहार का उल्लेख कर रहे हैं -

खिलजी वंश (१२९०-१३२० ई.) - इस वंश का सुल्तान जलालुद्दीन अहिंसा प्रेमी और सरल स्वभावी था। वह राज्य के विद्राहियों को भी क्षमा कर देता था। जैन आचार्य महासेनजी को अलाउद्दीन खिलजी से बहुत सम्मान प्राप्त था। वह दिगम्बर मुनियों के प्रति विशेष श्रद्धा-भक्ति रखता था। इनके राज दरबार में आचार्य महासेन से शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें महासेन आचार्य का ज्ञान और तप देखकर अलाउद्दीन ने मुनि के चरणों में अपना मस्तक रख दिया था। १५३० ईस्वी के शिलालेख में उल्लेख है कि आचार्य विद्यानन्दि की परम्परा के शिष्य आचार्य सिंहनन्दि ने बौद्धों आदि को पराजित किया था।

तुगलक वंश (१३२०-१४१३ ई.) - इस समय में राज्य के जैन धर्मावलम्बियों को धार्मिक क्रियाओं की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। इन्होंने जैन गुरुओं का सन्मान किया था। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के 'सूरा' और 'वीरा' नाम के दो मन्त्री जैन थे। मोहम्मद तुगलक ने आचार्य सिंहकीर्ति का बहुत सन्मान किया था।

फिरोजशाह तुगलक की बेगम को दिगम्बर मुनियों के दर्शन की बहुत भावना थी, इसलिये स्वयं फिरोजशाह ने और उनकी बेगम ने अपने दरबार में मुनियों का स्वागत और सन्मान किया था। बादशाह ने उन्हें ३२ उपाधियाँ प्रदान

अब नहीं पहनूँगा

स्वरूप को सजने संवरने का बहुत शौक था। वह हमेशा अपनी सुन्दरता के लिये नई क्रीम, जेल, साबुन, आदि प्रयोग करता रहता था। उसे इस बात का बहुत डर लगता था कि कहीं उसकी सुन्दरता कहीं खराब न हो जाये। कहीं कुछ बुरा न हो जाये इसके लिये वह अनेक प्रकार के उपाय करता था। वह अंधविश्वास में पड़कर कहीं ताबीज पहनता और कहीं भगवान पार्श्वनाथ की फोटो का लॉकेट भी पहनने लगा। उसकी माँ बहुत समझदार थी और प्रतिदिन जिनमंदिर में दर्शन-पूजन के साथ स्वाध्याय भी करतीं थीं। उन्होंने स्वरूप को समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह नहीं माना।

एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ घूमने गया तो उसने अपने एक दोस्त जीवन के हाथ में णमोकार मंत्र का एक ब्रासलेट पहने हुये देखा । स्वरूप को यह बहुत सुन्दर लगा उसने पूछा कि अरे जीवन ! यह ब्रासलेट तो बहुत सुन्दर है, कहाँ से लिया अरे स्वरूप ! यह ब्रासलेट मेरे अंकल ने मुझे दिया है। इस पर णमोकार मंत्र लिखा हुआ है। उनका कहना है कि णमोकार मंत्र में बहुत शक्ति है। यदि मैं यह ब्रासलेट पहनूँगा तो हमेशा संकट से दूर रहूँगा और मेरा कभी बुरा नहीं होगा - जीवन ने बताया। वाह ! यह तो बड़े कमाल का ब्रासलेट है। अपने अंकल से कहकर मुझे भी ऐसा ब्रासलेट मंगवा दोगे.... स्वरूप ने प्रार्थना करते हुये कहा।

जीवन ने प्रसन्न होकर कहा - हाँ हाँ! क्यों नहीं। जरूर, मैं कल ही अंकल से मंगाकर दे दूंगा।

दूसरे दिन जीवन ने ब्रासलेट लाकर स्वरूप को दे दिया। स्वरूप बहुत खुश हुआ। स्वरूप अब हमेशा वह ब्रासलेट अपने हाथ में पहने रहता। एक दिन नहाते समय उसका पैर फिसल गया और उसके पैर की हड्डी टूट गई। उसे पैर में प्लास्टर बंध गया। दूसरे दिन उसके पिता के दोस्त उससे मिलने घर आये तो उन्होंने स्वरूप के गले में भगवान के फोटो वाला लॉकेट और हाथ में णमोकार मंत्र वाला ब्रासलेट देखा तो उससे प्यार से पूछा - बेटा! तुम इसे क्यों पहनते हो ? स्वरूप ने कहा - अंकल ! ऐसा करने से भगवान सदैव हमारे साथ रहते हैं और हमारा बुरा नहीं होता। अंकल ने मुस्कराकर पूछा तो फिर तुम बाथरूम में कैसे गिर गये? इस प्रश्न का कोई उत्तर स्वरूप के पास नहीं था। अंकल ने प्यार से सिर पर हाथ फेरा और कहा देखो बेटा ! ये लॉकेट-ब्रासलेट पहनने से कुछ नहीं होता । अपना अच्छा बुरा तो पाप-पुण्य के अनुसार होता है। अच्छा ! ये बताओ जो लोग ये सब नहीं पहनते तो उनके भी कई काम अच्छे हो जाते हैं और तुमने पहने तो भी तुम्हारा बुरा हो गया। स्वरूप अंकल की बातें ध्यान से सुन रहा था। अंकल ने आगे कहा - दूसरी बात ये सब पहनकर हम उल्टा पाप ही करते हैं..... वो कैसे- स्वरूप ने अंकल की बात सुनने के पहले पूछा। अरे! हम पवित्र भगवान की फोटो और णमोकार मंत्र जैसा महामंत्र पहनकर बाथरूम जाते हैं, भोजन करते हैं, टी.वी. आदि भोग भोगते हैं तो उनका तो अपमान ही हुआ और सबसे बड़ी बात हम इन लॉकेट से अपना भला-बुरा मानकर गृहीत मिथ्यात्व का महापाप ही करते हैं। कुछ समझ में आया।

स्वरूप ने मौन होकर सिर हिलाया। बेटा! हमारे अच्छे परिणाम, देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति, स्वाध्याय आदि हमारा भविष्य अच्छा बनायेंगी। ऐसे कार्य करने से ही हमारा भला होगा।

स्वरूप ने हाथ जोड़कर कहा - सॉरी अंकल! मुझे कुछ नहीं पता था इसलिये गल्ती करता रहा। अब मैं वादा करता हूँ कि अब कभी भी ऐसी चीजें नहीं पहनूँगा और प्रतिदिन जिनमंदिर जाऊँगा।

स्वरूप की बातें सुनकर उसके मम्मी-पापा ने मुस्कराकर उसे गले से लगा लिया।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

सजा मिलती है उन्हें जो दूसरों के लिये सजते हैं ।

आपके प्रश्न जिनागम के उत्तर

प्रश्न 1- एक दिन प्रतिमा की पूजा न हो तो क्या प्रतिमा अपूज्य हो जाती है ?

उत्तर - प्रतिष्ठित प्रतिमा पूज्य ही होती है। प्रतिमा को पूजन की आवश्यकता नहीं होती। वह सदैव पूज्य ही है ।

प्रश्न 2- काना व्यक्ति पूजन कर सकता है ?

उत्तर - हाँ, वह नित्य पूजन अवश्य कर सकता है।

प्रश्न 3- फांसी की सजा सुनाने वाला हिंसक है या नहीं ?

उत्तर - हिंसा तो है। परन्तु वे द्वेषवश सजा नहीं दे रहे हैं इसलिये अल्प हिंसा है

प्रश्न 4- मुनिराज के सामने महिलाओं का नृत्य करना उचित है नहीं ?

उत्तर किसी भी शास्त्र में मुनिराज के समक्ष महिलाओं का नृत्य सही नहीं बताया है और दिगम्बर मुनिराज महाशील का पालन करते हैं, इसलिये महिलाओं का नृत्य करना उन पर उपसर्ग जैसा ही है।

प्रश्न 5- क्या स्त्रियाँ भगवान का अभिषेक कर सकती हैं ?

उत्तर - आगम में स्त्रियों को मुनिराज से सात हाथ दूर से बात करने का विधान है, तो वे परम वीतरागी जिनेन्द्र के अभिषेक कैसे कर सकती हैं ? ऐसा करना पाप ही है।

प्रश्न 6- अधिक नींद किस कर्म के उदय से आती है ?

उत्तर - दर्शनावरणी कर्म के उदय से।

प्रश्न 7 - एक बूंद शहद खाने में कितना पाप लगता है?

उत्तर - असंख्य जीवों के मारने का।

प्रश्न 8 - ॐ नमः सिद्धेभ्यः के 'ॐ' में जब सिद्ध आ गये तो उन्हें अलग से नमस्कार क्यों किया ?

उत्तर - पंचपरमेष्ठी में सिद्धपर्याय पाना ही जीव का परम लक्ष्य है।

प्रश्न-9. जिनमंदिर दर्शन करने जायें और मंदिर बंद मिले तो क्या करें ?

उत्तर - पहली बात तो जिनमंदिर समय पर ही जाना चाहिये। यदि भूख लगी हो और माँ घर पर न हो तो माँ को ढूँढकर लाते हो तो मंदिर के व्यवस्थापक को बुलाकर जिनमंदिर खुलवाकर दर्शन करना चाहिये ।

लोक में जो छिप-छिप कर किया जाये वह पाप है ।

संस्कार लाओगे कहाँ से

नन्हा बालक कहे समाज से.....

जब मुझे दादा-दादी,नाना-नानी की वह गोद और कहानियाँ नहीं दोगे,
तो, मुझमें संस्कार लाओगे कहाँ से?

जब तुम व्यस्त हो जाओगे, मुझे टीवी के सामने छोड़कर या वीडियो गेम में लगाकर
तो, मुझमें संस्कार लाओगे कहाँ से?

जब तुम मुझे स्कूल, ट्यूशन, कॉम्पीटिशन में लगाकर, मंदिर का अवसर ही न दोगे
तो, मुझमें संस्कार लाओगे कहाँ से?

जब तुम मेरी मनमानी आदतों को विराम ही न दोगे तो बताओ
तो, मुझमें संस्कार लाओगे कहाँ से?

जब तुमने मेरे जीवन के आरम्भ में जिनधर्म के संस्कार नहीं दिये
तो, मुझमें संस्कार लाओगे कहाँ से?

जब मैं बड़ा हुआ तो मुझे एहसास हुआ तो दुःखी मन से पूछता हूँ स्वयं से
कि, मुझमें संस्कार नहीं आये

कि जब मैं ही स्वयं ही संस्कारित नहीं हुआ तो
अपने बच्चों को संस्कार दूँगा कहाँ से ... ?

संकलन - ऋषभशास्त्री, दिल्ली

मुझे अपने कमरे में ही उत्तर मिल गये।

छत ने कहा - ऊँचे उद्देश्य रखो।
पंखे ने कहा - ठन्डे रहो। हमेशा शांत भाव से निर्णय करो।
घड़ी ने कहा - हर मिनिट कीमती है।
शीशे ने कहा - कुछ करने से पहले अपने अन्दर झांक लो।
खिड़की ने कहा - दुनिया को देखो।
हमारा स्वभाव जानना देखना है कुछ करना नहीं।
केलेन्डर ने कहा - अप डेट रहो।
दरवाजे ने कहा - अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये पूरा जोर लगाओ।

बांटने से ज्ञान बढ़ता है और छिपाने से घटता है ।

अद्भुत बालक

दक्षिण के अर्काट जिले के जिंजी प्रदेश का वेंकटामयेदुई नाम का राजा था। राजा का जन्म कबरई नाम निम्न जाति में हुआ था। उसने उच्च कुलीन कन्या से विवाह करने का निश्चय किया। अपनी यह इच्छा पूरी करने के लिये वह पागल सा हो गया। उसने अपने राज्य के समस्त जैन परिवारों के मुखियाओं को बुलाकर एक जैन कन्या की मांग की। इस मांग को सुनकर जैनी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने अपनी गुप्त मीटिंग की। उन्होंने सोचा कि राजा को हमसे हमारी कन्या मांगने साहस का कैसे हुआ ? इस नीच राजा को इसकी सजा मिलना चाहिये। उन्होंने अपनी कन्या राजा को देने की स्वीकति दे दी।

विवाह की तिथि आने पर राजा बारात लेकर पहुँचा किन्तु विवाह स्थल पर एक भी व्यक्ति नहीं था। वहाँ पर एक कुतिया बंधी थी। जिसके गले में एक कागज बंधा था जिस पर लिखा 'राजन! आपके साथ विवाह करने के लिये कोई भी जैन कन्या तैयार नहीं हुई। अत: आप इस कुतिया से विवाह कर लीजिये।

यह पढ़कर राजा क्रोध में आ गया और राज्य के समस्त जैनियों को मार डालने की आज्ञा दे दी। पूरे राज्य में जैनियों की हत्यायें होने लगीं। जिन जैनियों ने धर्म परिवर्तन कर लिया उन्हें

छोड़ दिया गया। जैनियों की पहचान वाले चिन्ह जिनदर्शन, छने हुये जल और रात्रि भोजन त्याग पर पांबदी लगा दी गई।

इन्हीं दिनों एक जैन बालक बैलूर के पास एक नदी के किनारे पानी छान कर पी रहा था। राजा के सिपाहियों ने उसे देखा और उसे पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने उस दिन पुत्र जन्म की खुशी में फांसी का आदेश न देकर दुबारा पानी छानकर न पीने की चेतावनी देकर छोड़ दिया।

जैन समाज पर यह घोर अन्याय देखकर उस बालक ने सोचा– मैं जैन धर्म का इतना प्रचार करूँगा कि जिससे जैन धर्म का अपमान समाप्त हो जाये। उसने श्रवणबेलगोला में मुनि दीक्षा लेकर अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया और संपूर्ण दक्षिण भारत मेंजैन धर्म का जोरदार प्रचार किया। इनका नाम मुनि वीरसेन था। अपनी प्रतिभा के बल पर वे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। इन्होंने नियम लिया कि वे प्रतिदिन 100 व्यक्तियों को जैन बनाकर आहार ग्रहण करेंगे। धर्मशून्य दक्षिण भारत में धर्म की जयजयकार होने लगी। अनेक अन्य धर्मी राजाओं ने भी आचार्य वीरसेन से जिनधर्म की दीक्षा ले ली।

अब मैगी कभी नहीं खाऊँगी ....

चहकती चेतना के अनेक सदाचार सम्बन्धी लेखों एवं बाल शिविरों के माध्यम से खान-पान सम्बन्धी जानकारी से सैकड़ों बच्चों ने अनेक प्रकार की अभक्ष्य वस्तुओं त्याग का नियम लिया है। यह हमारे अभियान की सफलता है। जबलपुर निवासी श्री रितेश जैन की ७ वर्षीय सुपुत्री अनुष्का जैन को मैगी खाने का बहुत शौक था। वह प्रतिदिन कम से कम दो बार मैगी अवश्य खाती थी। जिस दिन उसे मैगी नहीं मिलती या कोई उसे मैगी खाने से मना करता था तो वह रूठ जाती थी। चहकती चेतना के पिछले अंक में प्रकाशित हुआ था कि मैगी में सुअर के मांस का रस मिलाया जाता है, यह पढ़कर अनुष्का ने तुरन्त आजीवन मैगी छोड़ने का संकल्प ले लिया। अब उसे कोई मैगी खाने के लिये कहता है तो वह साफ मना कर देती है और कहती है मैं सुअर का मांस नहीं खाती।

अनुष्का के मंगलमय जीवन के प्रति हार्दिक शुभकामनायें।

अपने प्रभाव से यश और पैसा कमाया जा सकता है, धर्म नहीं।

परमेष्ठी प्रश्नमाला

प्रश्न -1 पाँच परमेष्ठियों में कितने भगवान और कितने गुरु हैं?

उत्तर - अरहंत, सिद्ध भगवान और आचार्य, उपाध्याय, साधु गुरु हैं।

प्रश्न -2 जिनमंदिर में किस परमेष्ठी की प्रतिमा मुख्य रूप से होती है?

उत्तर - अरहंत की।

प्रश्न -3 कितने परमेष्ठी कषाय सहित हैं?

उत्तर- आचार्य, उपाध्याय, साधु।

प्रश्न -4 कितने परमेष्ठी आहार (भोजन) करते हैं?

उत्तर- आचार्य, उपाध्याय, साधु।

प्रश्न -5 पाँच परमेष्ठियों में आर्यिका माता कौन सी परमेष्ठी हैं?

उत्तर- कोई परमेष्ठी नहीं।

प्रश्न -6 पाँच परमेष्ठियों में कितने परमेष्ठी इन्द्रिय सहित हैं?

उत्तर- सिद्ध को छोड़कर शेष सभी।

प्रश्न -7 ऐसे कितने परमेष्ठी हैं जिनकी इन्द्रिय तो हैं पर उनका उपयोग नहीं है ?

उत्तर- अरहंत।

प्रश्न -8 समवशरण किस परमेष्ठी का लगता है?

उत्तर- मात्र अरहंत परमेष्ठी का।

प्रश्न - 9 वर्तमान में बाहुबली कौन से परमेष्ठी हैं ?

उत्तर- सिद्ध परमेष्ठी।

प्रश्न -10 पाँच परमेष्ठी में कितने परमेष्ठी बने बिना मोक्ष मिल सकता है?

उत्तर- आचार्य, उपाध्याय।

प्रश्न -11 कितने परमेष्ठी पुनः जन्म ले सकते हैं?

उत्तर- आचार्य, उपाध्याय, साधु।

प्रश्न -12 मुनिराजों के नाम के आगे 108 क्यों लगाया जाता है?

उत्तर- 108 गुणों से युक्त होने के कारण।(28 मूलगुण, 22 परिषहजय, 12 तप, 12 भावना, 10 धर्म, 13 प्रकार का चारित्र, 6 कायजीवों की रक्षा, पंच आचार)

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अन्धा है ।

वेश का महत्व

एक राजा के दरबार में एक वेश बदलने वाला अलग - अलग वेश में आता था और राजा उसे प्रसन्न होकर इनाम भी देता था।

राजा ने एक दिन कहा - ऐसा स्वांग बनाओ, जिसमें कोई तुम्हें पहचान न पाये। ऐसा करने पर तुम्हें सौ स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में दी जायेंगी।

वह कलाकार ऐसा ही करने का वादा करके चला गया। उसका फिर कुछ पता नहीं चला। कुछ दिन बाद पूरे नगर में चर्चा फैल गई कि पास के जंगल में एक महात्मा आये हैं। जिनकी तपस्या चकित करने वाली है। वे किसी से कुछ नहीं लेते हैं।

चर्चा राजा तक पहुँची। वे भी दर्शन के लिये परिवार सहित संत के पास पहुँचे और बहुमूल्य सामग्री भी भेंट के लिये ले गये। संत की शांत मुद्रा, कठिन तपस्या और मौन साधना देखकर राजा ने संत को नमस्कार करके उनके चरणों की धूल अपने माथे पर लगाई और बहुमूल्य सामग्री संत के चरणों के पास रखकर बोले - हे तपस्वी! इस भेंट को स्वीकार कीजिये।

संत ने भेंट स्वीकार करने से मना कर दिया और उसे गरीबों में बांटने का निवेदन किया। राजा संत की ऐसी प्रवृत्ति देखकर उनकी प्रशंसा करते हुये लौट गये।

दूसरे दिन वह कलाकार राजदरबार में पहुँचा और राजा से अपना पुरस्कार मांगा। राजा ने आश्चर्य से पूछा - तुमने ऐसा कौन सा रूप बनाया जिससे तुम पुरस्कार मांग रहे हो।

कलाकार ने कहा - महाराज! आपने कल जिस संत के दर्शन किये थे, वह मैं ही था और उसने सारी कथा राजा को सुना दी। राजा ने आश्चर्य से कहा - तुमने अपना वादा पूरा किया और ये लो 100 स्वर्ण मुद्रायें। लेकिन मेरा एक प्रश्न है कि कल जब मैं तुम्हें बहुमूल्य रत्न -आभूषण, स्वर्ण मुद्रायें दे रहा था तब तुमने क्यों मना कर दिया ? वह आभूषण तो इन स्वर्ण मुद्राओं से कहीं मूल्यवान थे।

कलाकार ने कहा - महाराज! मैंने उस समय संत का वेश धारण किया था। मैं इस महान पद पर कलंक नहीं लगाना चाहता था। संत को त्याग ही शोभा देता है।

कलाकार के उत्तर से राजा प्रसन्न हो गया और उसे 500 स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में दीं।

सोच

एक बार एक कंजूस सेठ गहरे गड्ढे में गिर गया और पानी में डुबकियाँ लगाने लगा। किसी व्यक्ति को सेठ को डूबता देखकर दया आ गई। उसने तुरन्त कहा - लाओ ! अपना हाथ दो, मैं पकड़कर खींच लूंगा। पर वह कंजूस उसकी बात नहीं मान रहा था।

इतने में सेठजी का पड़ौसी वहाँ पहुँचा। वह सेठ के स्वभाव को अच्छी तरह जानता था, उसने दयालु व्यक्ति की बात को दूसरे शब्दों में कहा । उसने हाथ बढ़ाते हुये कहा - लो लालाजी! मेरा हाथ इसे पकड़कर आप बाहर आ जाओ। सेठ ने तुरन्त उसका हाथ पकड़ लिया और बाहर आ गये। उस दयालु व्यक्ति ने आश्चर्य से इसका कारण पूछा तो पड़ौसी ने बताया सेठ बहुत कंजूस है। वह लेना जानते हैं, देना नहीं। तुमने कहा - ''लाओ'' मैंने कहा 'लो' यह है 'लाओ' और 'लो' का अन्तर ।

प्रेम का शासन

एक चिड़िया बार-बार आकर दीवान अमरचन्दजी के कंधे पर बैठ जाती थी। यह देखकर महाराज रामसिंह ने कहा - दीवानजी! आपसे जब एक चिड़िया भी नहीं डरती तो आप युद्ध कैसे कर सकेंगे ? तब आप प्रजा पर शासन कैसे कर सकेंगे। देखो ! मेरे ऊपर तो कभी नहीं बैठती। दीवानजी ने उत्तर दिया- आपका शासन भय पर टिका हुआ है और मेरा शासन प्रेम पर। इसलिये वह आपके पास आने से डरती है। प्रेम में अपनापन है और भय में प्रेम का दिखावा है और अन्दर से द्वेष। यह सुनकर महाराज चुप हो गये।

बड़े लोग अहंकार नहीं करते और अहंकारी कभी बड़े नहीं हो सकते।

एकऐसामुस्लिमव्यक्तित्व जिसेसमयसारकीसारीगाथायें औरतत्वार्थसूत्रपूरायादहै

कहा जाता है कि जैन धर्म किसी व्यक्ति या जाति का नहीं बल्कि उस पर श्रद्धान करने वालों का है। ग्रीष्मकालीन बाल शिविरों की शृंखला में एक ऐसे व्यक्ति का परिचय हुआ जिसे सुनकर आप भी आश्चर्य चकित रह जायेंगे। रतलाम निवासी प्रोफेसर अजहर हाशमी साहित्य के क्षेत्र में एक बड़ा नाम है। राजस्थान के पिड़ावा गाँव में जन्मे श्री हाशमी को जैन धर्म पर अटूट श्रद्धान है। श्री हाशमी को आचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध ग्रन्थ समयसार की सम्पूर्ण 415 प्राकृत गाथायें याद हैं। साथ ही आचार्य उमास्वामी के तत्वार्थ सूत्र के 357 सूत्र अच्छी तरह से याद हैं। उन्हें इन गाथाओं और सूत्रों के साथ उनके भाव और विषय का पूरा ज्ञान है। उन्हें पूरे ग्रन्थ के विषय पेज नम्बर सहित याद हैं। साथ ही श्री अजहर हाशमी मांसाहार, नशासेवन से तो दूर हैं ही, आश्चर्य यह है कि वे रात्रि भोजन नहीं करते, आलू-प्याज आदि जमीकंद को स्पर्श भी नहीं करते। जैन दर्शन के सिद्धांतों पर अनेक प्रभावी कविताओं के लेखक श्री हाशमी ने विवाह नहीं किया और कोई व्यक्ति अपने जीवन की कोई समस्या लेकर आता है तो वे उसे णमोकार मंत्र का जाप करने की सलाह देते हैं। जब वे जैन दर्शन के किसी विषय पर व्याख्यान देते हैं तो उनके विषय के गहन अध्ययन सुनकर लगता ही नहीं कि वे मुस्लिम हैं। वे सारा व्याख्यान बिना देखे ही बोलते हैं। ऐसे अद्‌भुत व्यक्तित्व के धारी श्री अजहर हाशमी के मंगलमय जीवन के लिये शुभकामनायें।

- कवि श्री अनिल जैन 'उपहार'
पिड़ावा से प्राप्त जानकारी के अनुसार

जैन क्विज

प्रत्येक शब्द के भाव में
एक तीर्थंकर का नाम छिपा हुआ है खोजोगे तो पाओगे-

1. Possible
2. Congratulation
3. Silent
4. Winner
5. Cool cool
6. Oh!
7. First
8. Religious
9. Lotus
10. Clean
11. Moon
12. Flower+dental
13. No end of
14. Monk
15. Stronger

Smt. Nidhi saket Jain, Delhi

अपनी रेसिपी भेजें - जैन रेसिपी बुक का शीघ्र प्रकाशन

आजकल बाजार की लगभग प्रत्येक वस्तु में मांसाहार पाया जा रहा है। जिन वस्तुओं पर ग्रीन सिम्बाल पाया होता है उन वस्तुओं में भी पशुओं की चर्बी मिलाई जा रही है। जैन समाज के परिवारों के सैकड़ों बच्चों ने इनका त्याग कर दिया है। लेकिन अब महिलाओं के सामने यह बड़ी समस्या हो गई कि बच्चों को और परिवार को क्या खिलायें ? बच्चे जब दूसरे बच्चों को बाजार की सामग्री खाते हुये देखते हैं तो उनका मन भी खाने के लिये मचलता है लेकिन वे खाते नहीं। इस समस्या का समाधान करने के लिये हमारी संस्था ने जैन रेसिपी की बुक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस बुक में बच्चों के टिफिन के अनेक स्वादिष्ट व्यंजन, मिल्क शेक, टॉफी, जैन पिज्जा जैसी लगभग 150 व्यंजन की बुक तैयार की जायेगी। ये सभी व्यंजन जमीकंद के बिना जैनागम की मर्यादा के अनुसार बनाये जा सकेंगे। यदि आप भी किसी विशेष व्यंजन बनाने की विधि जानते हों तो आप अपनी व्यंजन बनाने की पूरी विधि फोटो सहित हमें भेजें। चयनित होने पर आपकी रेसिपी नाम सहित प्रकाशित की जायेगी। अलग-अलग वर्ग में श्रेष्ठ प्रविष्टियों को पुरस्कार दिये जायेंगे। रेसिपी भेजने का पता- सर्वोदय ज्ञानपीठ, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. मो. 9300642434 आप अपनी रेसिपी हमें e-mail : chehaktichetna@yahoo.com पर या 9300642434 पर whatapp कर सकते है - संपादक

हमारे नये शिरोमणि परम संरक्षक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा विगत १५ वर्षों से बाल युवा वर्ग में जिनवाणी के संस्कारों के लिये विशेष प्रयास किये गये हैं। इसके अन्तर्गत अनेक आडियो-वीडियो सी.डी. का निर्माण एवं साहित्य का प्रकाशन हुआ है। आगे भी अनेक योजनायें गतिमान हैं। इन गतिविधियों से प्रभावित होकर मुम्बई विलेपारले निवासी श्रीमति आरती जैन ने संस्था के शिरोमणि संरक्षक बनने की भावना व्यक्त की। संस्था परिवार श्रीमति आरती जैन का हृदय से आभार प्रदर्शित करते हुये उनके धर्ममय जीवन की मंगल कामना करता है। - संपादक

menÙeesie Øeehle

5000/- श्रीमति शैली जैन - डॉ. रवीश जैन सनावद।

1500/- श्री संतोष पाटनी, वाशिम प्रचार-प्रसार हेतु।

1000/- श्री सुशील कुमार जैन, कोटा आगामी योजनाओं हेतु प्रदत्त।

500/- श्रीमति गेंदाबाई धर्मपत्नि पण्डित कपूरचंदजी जैन करेली के स्वर्गवास पर उनके पुत्र श्री मुकेश जैन द्वारा प्राप्त। संस्था परिवार द्वारा दिवंगत आत्मा के शीघ्र अभ्युदय की मंगल कामना।

De#ele pewve
ueyeesOe keâer hejer#ee ceW Ø

मुम्बई निवासी श्री विमल कुमार जैन के पौत्र एवं श्री नितेश जैन के पुत्र अक्षत जैन ने बचपन से अपनी प्रतिभा से अपने परिवार को खुशियाँ प्रदान की हैं। उसने श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड चैतन्यधाम द्वारा आयोजित बालबोध की परीक्षा में **93** प्रतिशत प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अक्षत मुम्बई के जवेरी बाजार स्थित सीमंधर जिनालय में संचालित पाठशाला का छात्र है।

पूर्व में भी अनेक बड़े कार्यक्रमों में अनेक विषयों पर **15** मिनिट का धाराप्रवाह प्रवचन करके अनेक लोगों को प्रभावित किया है। ऐसे संस्कारवान बालक अक्षत को मांगलिक जीवन की शुभकामनायें और परिवार को साधुवाद।

ऐतिहासिक
जैन शिल्पी

अजनाभ वर्ष के प्रवर्तक महाराजा नाभिराय

5 हजार वर्ष प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता की खुदाई में निकली मूर्ति का धड़। इसे भारत के सभी बड़े पुरातत्त्ववेत्ताओं ने महाराजा नाभिराय की मूर्ति माना है, जो कि ऋषभदेव के पिता थे। डॉ. रामप्रसाद चंदा, प्रो. प्राणनाथ विद्यालंकार, डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी आदि विद्वानों ने इसे प्रमाणित किया है। प्राचीन भारत का नाम इन्हीं के नाम से अजनाभ वर्ष पड़ा।

तीर्थङ्कर मूर्ति

ईसा से कई शताब्दियों पूर्व की लोहानीपुर (पटना, बिहार) उत्खनन से प्राप्त मूर्ति का धड़ जिसे पुरातत्त्व के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल आदि अनेक विद्वानों ने प्रमाणित करते हुए बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्म सम्बन्धी मूर्तियों की अपेक्षा प्राचीन माना है।

दुर्लभ सील

5 हजार वर्ष प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता की खुदाई से सील, जिसे सर जॉन मार्शल ने अनुसंधान कर बताया कि इस सील में महायोगी ऋषभदेव को चक्रवर्ती भरत प्रणाम कर रहे हैं एवं नीचे करबद्ध मुद्रा में उनके सातों मंत्रीगण खड़े हैं। प्रो. रामप्रसाद चंदा, डॉ. एम. एल. शर्मा आदि विद्वानों ने भी माना है।

जो दूसरों की नहीं सुनते, वे कभी कुछ नहीं सीख सकते ।

तुम्हें वीर बनना है

तुम्हें वीर बनना है, महावीर बनना है
भगवन बनना कैसा लगता है
हमें अच्छा अच्छा अच्छा लगता है
गाली देंगे कभी नहीं, झगड़ा करेंगे कभी नहीं
पंच प्रभु का नाम सुमरना कैसा लगता है
हमें अच्छा अच्छा अच्छा लगता है ।।

तुम्हें वीर बनना है.... ।।

रात में खायें कभी नहीं, बिना छना जल पियें नहीं ।
नीचे देख देखकर चलना कैसा लगता है,
हमें अच्छा अच्छा अच्छा लगता है ।।

तुम्हें वीर बनना है.... ।।

आलू प्याज खाते नहीं, पाठशाला को जाते सभी ।
पूजा पाठ में चित्त लगाना कैसा लगता है,
हमें अच्छा अच्छा अच्छा लगता है ।।

तुम्हें वीर बनना है.... ।।

जिनशास्त्रों को रोज पढ़ेंगे, इसका ही अनुसरण करेंगे ।
मुनिराजों सा जीवन जीना कैसा लगता है,
हमें अच्छा अच्छा अच्छा लगता है ।।

तुम्हें वीर बनना है.... ।।

ब्र.सुमतप्रकाश जी जैन

प्रशंसा से ज्ञानी का विकास होता है और अज्ञानी का विनाश ।

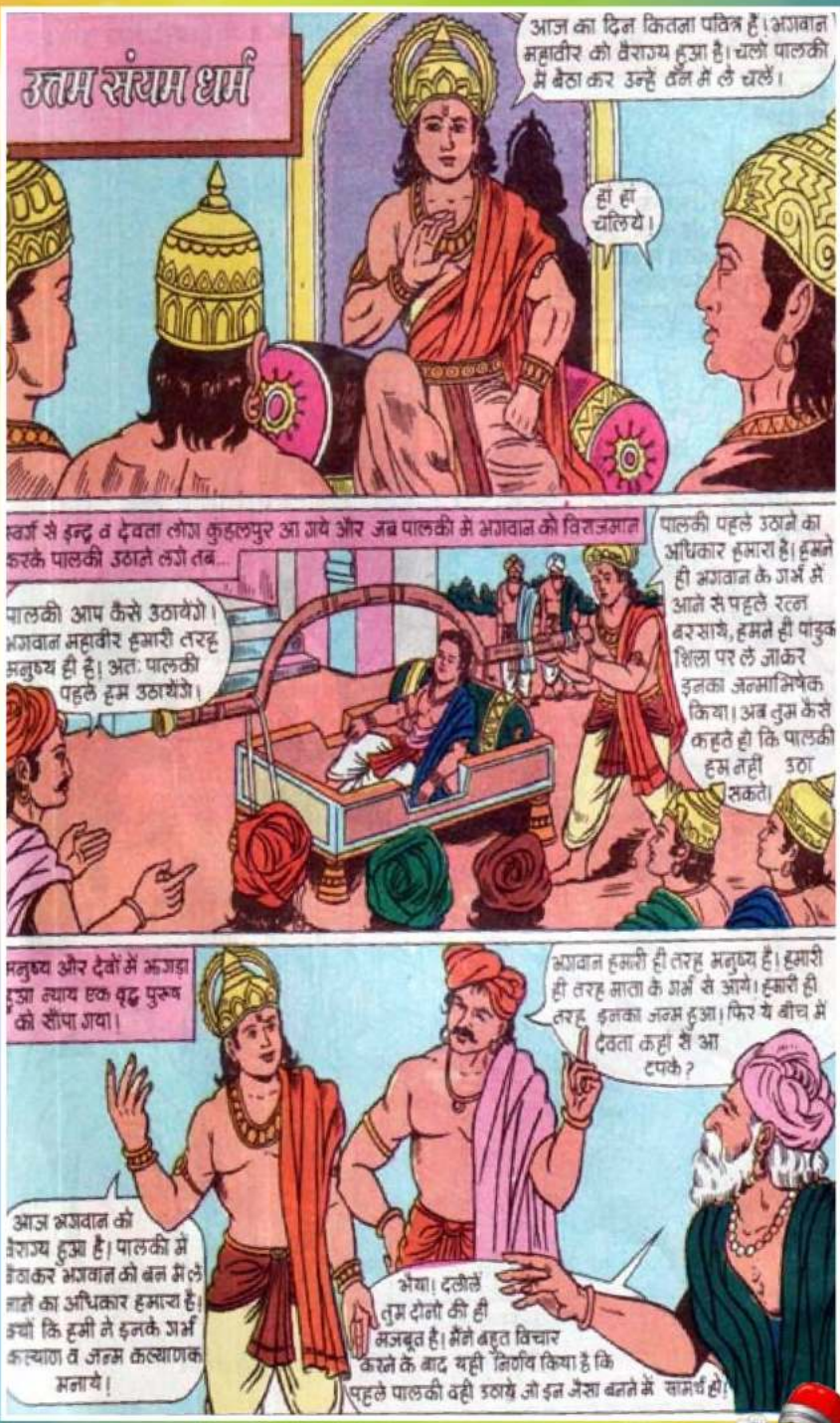

उत्तम संयम धर्म
आज का दिन कितना पवित्र है। भगवान महावीर को वैराग्य हुआ है। चलो पालकी में बैठा कर उन्हें वन में ले चलें।
हां हां चलिये।
स्वर्ग से इन्द्र व देवता लोग कुण्डलपुर आ गये और जब पालकी में भगवान को विराजमान करके पालकी उठाने लगे तब...
पालकी पहले उठाने का अधिकार हमारा है। हमने ही भगवान के गर्भ में आने से पहले रत्न बरसाये, हमने ही पांडुक शिला पर ले जाकर इनका जन्माभिषेक किया। अब तुम कैसे कहते हो कि पालकी हम नहीं उठा सकते।
पालकी आप कैसे उठायेंगे। भगवान महावीर हमारी तरह मनुष्य ही हैं। अतः पालकी पहले हम उठायेंगे।
मनुष्य और देवों में झगड़ा हुआ न्याय एक वृद्ध पुरुष को सौंपा गया।
भगवान हमारी ही तरह मनुष्य हैं। हमारी ही तरह माता के गर्भ से आये। हमारी ही तरह इनका जन्म हुआ। फिर ये बीच में देवता कहां से आ टपके?
आज भगवान को वैराग्य हुआ है। पालकी में बैठाकर भगवान को बन में ले जाने का अधिकार हमारा है। क्यों कि हमी ने इनके गर्भ कल्याण व जन्म कल्याणक मनाये।
भैया! दलीलें तुम दोनों की ही मजबूत हैं। मैंने बहुत विचार करने के बाद यही निर्णय किया है कि पहले पालकी वही उठाये जो इन जैसा बनने में समर्थ हो।

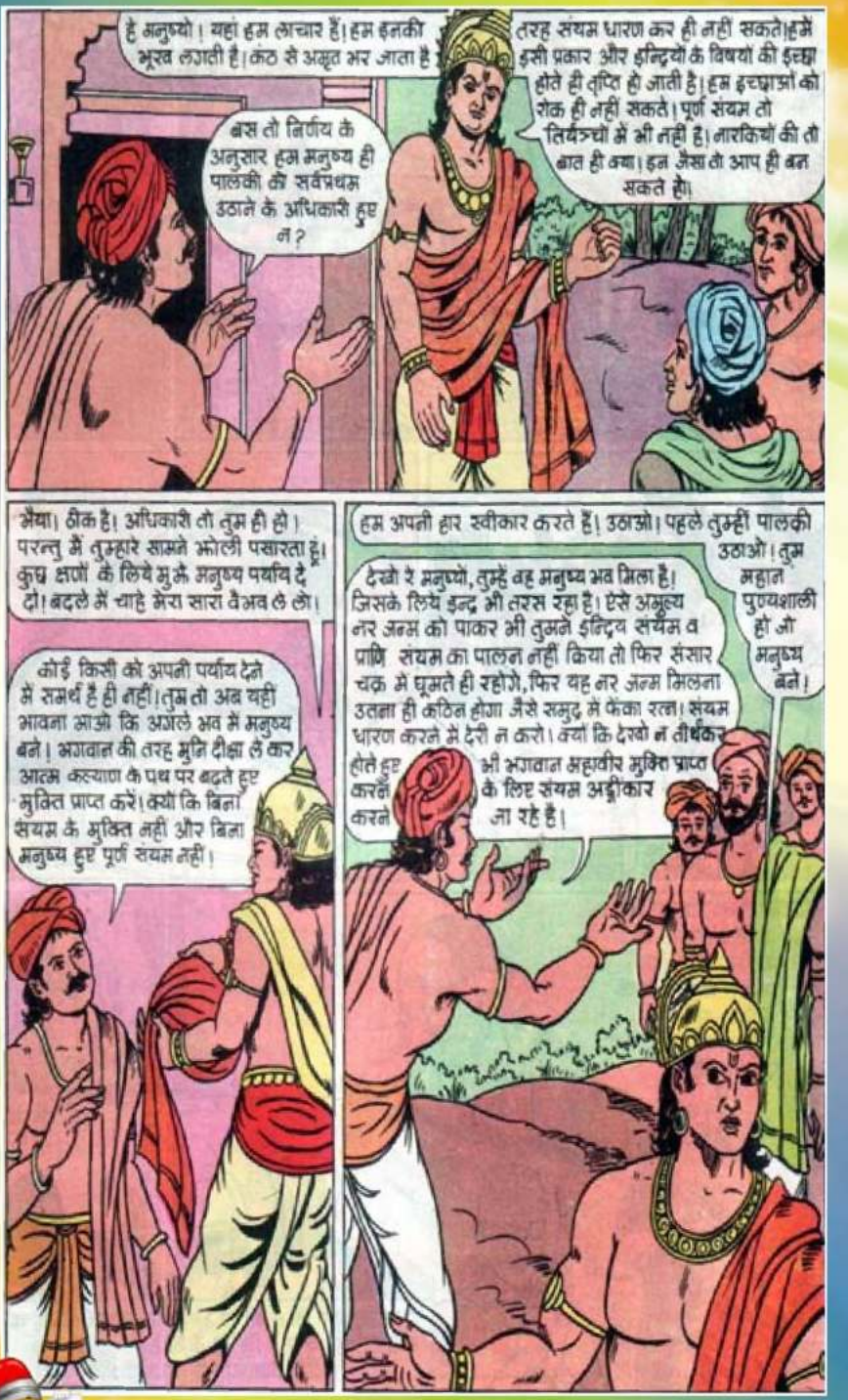
हे मनुष्यो! यहां हम लाचार हैं। हम इनकी भूख लगती है। कंठ से अमृत भर जाता है
बस तो निर्णय के अनुसार हम मनुष्य ही पालकी को सर्वप्रथम उठाने के अधिकारी हुए न?
तरह संयम धारण कर ही नहीं सकते। हमें इसी प्रकार और इन्द्रियों के विषयों की इच्छा होते ही तृप्ति हो जाती है। हम इच्छाओं को रोक ही नहीं सकते। पूर्ण संयम तो तिर्यञ्चों में भी नहीं है। नारकियों की तो बात ही क्या। इन जैसा तो आप ही बन सकते हो।
भैया। ठीक है। अधिकारी तो तुम ही हो। परन्तु मैं तुम्हारे सामने झोली पसारता हूं। कुछ क्षणों के लिये मुझे मनुष्य पर्याय दे दो। बदले में चाहे मेरा सारा वैभव ले लो।
कोई किसी को अपनी पर्याय देने में समर्थ है ही नहीं। तुम तो अब यही भावना भाओ कि अगले भव में मनुष्य बने। भगवान की तरह मुनि दीक्षा ले कर आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ते हुए मुक्ति प्राप्त करें। क्यों कि बिना संयम के मुक्ति नहीं और बिना मनुष्य हुए पूर्ण संयम नहीं।
हम अपनी हार स्वीकार करते हैं। उठाओ। पहले तुम्हीं पालकी उठाओ। तुम महान पुण्यशाली हो जो मनुष्य बने।
देखो रे मनुष्यो, तुम्हें वह मनुष्य भव मिला है। जिसके लिये इन्द्र भी तरस रहा है। ऐसे अमूल्य नर जन्म को पाकर भी तुमने इन्द्रिय संयम व प्राणि संयम का पालन नहीं किया तो फिर संसार चक्र में घूमते ही रहोगे, फिर यह नर जन्म मिलना उतना ही कठिन होगा जैसे समुद्र में फेंका रत्न। संयम धारण करने में देरी न करो। क्यों कि देखो न तीर्थंकर होते हुए भी भगवान महावीर मुक्ति प्राप्त करने के लिए संयम अङ्गीकार कर रहे हैं।

निर्णयानुसार पहले पालकी लेकर भूमिगोचर मनुष्य चले। फिर विद्याधर और अन्त में देव...

भगवान ने वस्त्राभूषणों का त्याग किया केश लौंच किया 'नमः सिद्धेभ्यः' कहा और बढ़ चले उस शत्रु पर जिसके बिना मुक्ति नहीं...

पं. धानत राय जी ने भी तो उत्तम संयम धर्म की महत्ता बतलाते हुए कहा है कि वह कैसा है?...
"जिस बिना नहि जिनराज सीझै"

चलो शिखरजी मंगल अवसर अपूर्व अनुभूति

श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा आयोजित
जैन युवा फैडरेशन, उज्जैन द्वारा संयोजित
सहयोगी - तीर्थधाम मंगलायतन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई
पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के 125 वें जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर

निजात्म केलि शिखर शिविर

सोमवार,दिनांक 29 सितम्बरसेरविवार, 5अक्टूबर 2014तक

स्थान - श्री दिगम्बर जैन मध्यलोक शोध संस्थान, मधुवन सम्मेदशिखरजी

विशेष आकर्षण

- सिद्ध परमेष्ठी विधान
- पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी का लाभ
- विशिष्ट विद्वानों का समागम
- जैन सिद्धान्तों पर आध्यात्मिक संगोष्ठी
- बालक कुन्दकुन्द की विदाई
- रत्नत्रय रैली
- रत्नत्रय की स्पष्ट झांकी
- भावी भगवन्तों का मेला
- आध्यात्मिक भजन-संगीत माधुर्य
- सामूहिक पहाड़ वन्दना
- के.के.पी.पी.एस. अधिवेशन
- जिन सिद्धान्तों का मर्म

साथ ही सम्मेद शिखरजी धाम पर अपूर्व अवसर

बाल संस्कार ज्ञान वैराग्य महोत्सव

बाल शिविर की प्रमुख गतिविधियाँ

- बाल मनोविज्ञान के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा शिक्षण
- धार्मिक कक्षाओं द्वारा तत्वज्ञान का लाभ
- प्रोजेक्टर फिल्म द्वारा नैतिक एवं सामाजिक शिक्षण
- व्यक्तित्व विकास एवं जैनत्व के संस्कार
- जिनेन्द्र भक्ति एवं अनेक बाल गीतों की रोचकता
- आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम

यदि किसी वीतराग विज्ञान पाठशाला के छात्र अपनी लघु सांस्कृतिक प्रस्तुति देना चाहते हैं तो उनका हार्दिक स्वागत है। संस्था द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा।

आप इस पावन महोत्सव के अध्यात्म सरोवर में स्नान हेतु परिवार व इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

विशेष - बाल शिविर में 5 वर्ष से 17 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को प्रवेश

निवेदक-श्रीकुन्दकुन्दप्रवचनप्रसारणसंस्थान,उज्जैन
Mob.: 9425091102, 9826029621, 9414687131